अणुव्रत : मर्यादित जीवन की लक्ष्मण रेखा

– डॉ. एस.एल. गांधी

विकास की आँधी

आज भौतिक विकास चरम स्थिति तक पहुंच चुका है। उन्नीसवीं सदी का श्रम–साध्य जीवन अब बीते युग की बात है। आज मनुष्य का अधिकांष कार्य मषीनें करती हैं। उसकी सेवा में कारें, हवाई जहाज, इंटरनेट एवं कृत्रिम बुद्धि से संचालित रोबोट सदैव उपस्थित है। उसके ऐषो आराम के लिए विज्ञान ने क्या–क्या नहीं दिया? विकसित देषों के किसी शहर में चले जाये, ऊँची–ऊँची गगनचुम्बी अट्टालिकाएं, कई लेन वाली चौड़ी सड़कें, ट्रॉफिक पुलिस की अनुपस्थिति में स्वचालित लाइट सिस्टम से नियंत्रित असंख्य कारों, बसों का यातायात, बुलेट ट्रेन एवं बड़े–बड़े मालों की चकाचौंध से आप आष्चर्यचकित एवं प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। आज गरीब–अमीर सबके हाथ में मोबाइल फोन, स्मार्ट फोन एवं सेटेलाइट फोन भी देखने को मिलते हैं लेकिन इसके साथ ही विज्ञान ने अकल्पित, अपूर्व एवं लोमहर्षक त्रासदियां भी दी हैं। हिरोषिमा–होलोकास्ट एवं दो विष्व युद्धों में करोड़ों निर्दोष लोगों एवं उनके घरों की तबाही के दृष्यों से किसका हृदय द्रवित नहीं होगा। मुझे आज भी याद है जब मैं 1988 में जापान की एक संस्था द्वारा आमंत्रित किये जाने पर हिरोषिमा में आयोजित एक विष्व शांति सम्मेलन में भाग लेने गया था और सम्मेलन के बाद जब म्यूजियम में हिरोषिमा–नागासाकी आणविक–त्रासदी के दृष्यों को देखकर बाहर निकला तो मेरी आँखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहमान थी। मैं ही नहीं मेरे साथ जितने भी लोग थे, 43 वर्ष पूर्व घटित इस भयावह आणविक नरसंहार को देखकर सिसक–सिसक कर रो रहे थे। मानवीय, भौतिक सुखों के साथ यह रक्तरंजित त्रासदी भी विज्ञान की ही देन थी। ठीक पांच वर्ष बाद (1950) में जब न्यूयार्क से प्रकाषित टाइम मैगजिन के एक संवाददाता ने चांदनी चौक नई दिल्ली में युवक आचार्य तुलसी के आव्हान पर एक

हजार से अधिक व्यक्तियों को आजीवन हिंसा एवं अनैतिकता के छोड़ने के अणुव्रत ग्रहण करते देखा तो उसने 'अणुव्रत बनाम अणुबम' शीर्षक से उक्त पत्रिका में एक लेख प्रकाषित कर पष्चिम में एक अपूर्व हलचल पैदा कर दी। उन दिनों विष्व का जन मानस अणुबम की व्यापक विनाषषीलता के भय से ग्रस्त था अतः उसने लिखा कि अणुव्रत ही वस्तुतः अणुबम की वास्तविक काट हो सकती है। एक क्रूर, घमंडी एवं अमर्यादित व्यक्ति ही ऐसा दुष्ट कार्य कर सकता है।

नैतिक मूल्यों का ह्रास एवं वहनीयता (सस्टेनेबिलिटी) का संकट

सन् 1950 से अब तक गंगा में काफी पानी बह चुका है। पूरे विष्व में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों में भारी गिरावट आई है। यद्यपि द्वितीय विष्व युद्ध के बाद न तो ऐसा महायुद्ध हुआ है और न ही नरसंहार लेकिन मानव जाति आज धर्म सम्प्रदायों की संकीर्णता, जाति, रंग, वर्ण, वामपंथी एवं दक्षिणपंथी विचारधारा, उग्र राष्ट्रवाद की अवधारणा में अत्यधिक विभाजित है। प्रेम, सहिष्णुता एवं उदारता के शाष्वत गुण हमारे जीवन से नदारद है एवं विविधता में एकता की परंपरा लुप्त हो रही है। हत्या, बलात्कार, दुर्व्यवहार, अप्रमाणिकता, धोखा, लूट एवं महिलाओं एवं बच्चों के शोषण और उन पर होने वाले अत्याचारों की घटनाओं में बेषुमार वृद्धि हो रही है एवं वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मर्यादाएं तार–तार होती देखी जा रही हैं। हमारे दैनिक जीवन में असंयम, उत्तरदायित्वहीनता, स्वच्छंदचारिता, अमर्यादित जीवनषैली, झूठ एवं पाखंड का बोलबाला है। राजनीति में शुचिता एवं नैतिकता का नितांत अभाव है। हिंसा एवं घृणा की संस्कृति हमारे घरों, स्कूलों, विष्वविद्यालयों में परिस्रवण कर चुकी है और अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी सारा विष्व छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित हो गया है। हमारे देष में भ्रष्टाचार, रिष्वतखोरी, खाद्य पदार्थों में मिलावट, पग–पग पर धोखा, साइबर ठगी, प्रतियोगी परिक्षाओं में प्रष्न–पत्रों का बड़े पैमाने पर बार–बार आउट हो जाना आदि हमारे चरम चारित्रिक पतन की सूचक है। हिरोषिमा–नागासाकी त्रासदी की भयानकता को देखकर लगा

था कि अब कभी भी युद्ध नहीं होगा लेकिन छोटे–मोटे स्तर पर विष्व के कई हिस्सों में अभी भी कई युद्ध चल रहे हैं। रषिया–यूक्रेन एवं इसरायल एवं पेलिस्टीन में हजारों लोग मर रहे हैं लेकिन निहित स्वार्थों के चलते बड़े देष इन युद्धों को रोकने के प्रस्तावों पर विटो का प्रयोग कर रहे हैं।

आणविक युद्ध का खतरा निरंतर बना हुआ है। इन परिस्थितियों में क्या हिंसा मुक्त विष्व का स्वप्न कभी पूरा होगा? आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का मानना था कि यह संभव है यदि हम अब आध्यात्मिक विकास की ओर ध्यान दें। प्रत्येक मनुष्य के भीतर अनन्त उर्जा, अनन्त ज्ञान एवं अनन्त शांति का एक असीम भण्डार है। इसे सक्रिय करने की जरूरत है। इस अक्षय आधान तक पहुंचने के लिए संकल्प पहली सीढ़ी है। छोटे–छोटे संकल्पों (व्रतों) से हम अपने आचरण की लक्ष्मण रेखा निर्धारित करें और स्वरूपान्तरण की श्रृंखला से जुड़े। यदि हम भीतर देखने का प्रयत्न करें, हिंसा एवं अनैतिकता का प्रवाह स्वतः रुक ही जावेगा। हमारा हृदय ईष्वर का मंदिर है। हमें इसकी पवित्रता बनाए रखनी होगी। हमारी असंयमित गतिविधियों के कारण जीवन को चलाने वाले प्राकृतिक संसाधन अत्यधिक दोहन से समाप्ति की ओर है। एक ओर गरीबी एवं भूखमरी बढ़ती जा रही है, दूसरी ओर आर्थिक असमानता की रेखा आसमान छू रही है। विष्व की 20 प्रतिषत आबादी का दुनिया के 80 प्रतिषत संसाधनों पर कब्जा है, बची 80 प्रतिषत आबादी केवल 20 प्रतिषत बचे हुए संसाधनों पर जीने के लिए बाध्य है। यह कैसा सामाजिक न्याय है? जनसंख्या विस्फोट के कारण आवष्यक संसाधनों की भारी कमी है। जंगलों की अंधाधुंध कटाई के कारण नदियां सूख रही हैं, अनेक प्रजातियां लुप्त हो रही है। जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी का संकट गहराता जा रहा है। ग्रीन हाउस गैसेज की वृद्धि के कारण पृथ्वी के तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है। पीने के पानी के स्रोत के हिमखंड पिघल रहे हैं। सम्पूर्ण विष्व जलवायु परिवर्तन एवं वैष्विक उष्णता की समस्या से जूझ रहा है। अब समय आ गया है कि हम हमारी सभी गतिविधियों

की गति को सीमित करें, हमारे लालच पर अंकुष लगावें अन्यथा वैज्ञानिकों के अनुसार तीसरी सहस्राब्दी में हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो सकता है। इसी संकट के समाधान हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ ने 17 सस्टेनेबल डेवलपमेंट लक्ष्य निर्धारित किये हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए विष्व की सरकारों ने प्रतिबद्धता व्यक्त की है। लेकिन क्या इस समस्या का केवल सरकार के स्तर पर समाधान संभव है? बिना आमजन की सहभागिता के इसमें सफलता केवल मृगमिरिचिका ही साबित होगी। यह मानव निर्मित संकट है और जब तक वैष्विक स्तर पर हर व्यक्ति अहिंसा एवं अपरिग्रह के कुछ अणुव्रतों पर आधारित जीवनषैली नहीं अपनाएगा, स्थितियां बद से बदतर होती जावेगी। आचार्य तुलसी ने 74 वर्ष पूर्व एक नारा दिया था – 'संयमः खलु जीवनम्' – संयम ही जीवन है। अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात करते हुए उस वक्त उन्होंने लिखा – "यह सही है कि मनुष्य की बाह्य शक्तियों में अत्यधिक वृद्धि हुई है लेकिन इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता कि उसकी आंतरिक शक्ति में बहुत कमी आई है। ज्यों–ज्यों मन की आंतरिक अवस्थाएं दूषित होती जाती है, स्थितियां अत्यधिक जटिल हो जाती है। हमारे सभी रोगों की जड़ आंतरिक सत्ता के गुणों का ह्रास होना ही है। मनुष्य ब्राह्य चमक से हतप्रभ है। वह इस प्रष्न का उत्तर प्राप्त नहीं कर सका है कि आधुनिक युग को विकास का युग कहा जाय या विनाष का। फिर भी हमें एक बात नहीं भूलना चाहिए कि अणुव्रत आन्दोलन के लक्ष्य सभी पांच व्रतों में निहित भावना का पालन करने पर ही प्राप्त किये जा सकते हैं।"

अणुव्रत : हमारे मर्यादित जीवन की लक्ष्मण रेखा

आचार्य तुलसी का मत था कि यदि व्यक्ति का जीवन बदल जाता है, उसका जीवन संयममय हो जाता है तो समाज स्वतः परिवर्तित हो जावेगा। सभी समस्याओं के मूल में असंयम है। व्यक्ति हर क्षेत्र में लक्ष्मण रेखा लांग चुका है। उसकी लोभवृत्ति पर लगाम नहीं है, वह दुनिया का सबसे धनी व्यक्ति बनना चाहता है, उसके लिए समाज और राष्ट्र गौण है। उसकी स्वार्थपूर्ति ही उसके जीवन का

एकमात्र लक्ष्य है। अणुव्रत उसकी उस अनियंत्रित वृत्ति पर अंकुष लगाता है। इसलिए चाहे जैव विविधता और पारिस्थितिकी का संकट हो या फिर वहनीयता (सस्टेनेबिलिटी) और जलवायु परिवर्तन का संकट हो या युद्ध हो, हमारे क्रियाकलापों का सीमाकरण ही एकमात्र समाधान है।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन की इन पंक्तियों में व्याख्या की :

"अणुव्रत नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन के पुनरुत्थान की एक परियोजना है। इसका उद्देष्य मनुष्य के राजनैतिक एवं सामाजिक हित की अपेक्षा कहीं अधिक ऊंचा है। इसका उद्देष्य उसकी नैतिक एवं आध्यात्मिक भलाई है। आध्यात्मिक हित न केवल सर्वोपरि हित है अपितु सम्पूर्ण हित है। इसमें स्वयं एवं दूसरों का भी हित सम्मिलित है।"

आचार्य तुलसी ने भगवान महावीर द्वारा जैन श्रावक–श्राविकाओं के लिए निर्धारित 12 व्रतों से प्रेरणा ली और इस युग की समस्याओं को ध्यान में रखकर जैन–अजैन सभी के लिए 11 अणुव्रतों की नई आचार–संहिता निर्धारित की। इसमें हर जाति, धर्म के लोग सम्मिलित हो सकते थे। यह वस्तुतः सम्प्रदायातीत मानव–धर्म का निरूपण है। व्रत की परम्परा हर धर्म में है। आचार्य तुलसी ने एक साहसिक कार्य किया। अणुव्रतों को जैन समुदाय से बाहर लाकर इसे सामाजिक सौष्ठव के सार्वभौम अभियान का रूप दिया। देष में अंतःधर्मसम्प्रदाय की समझ एवं सहयोग का यह अभिनव उपक्रम था। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा – "समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अनैतिक आचरण के विरूद्ध यह एक सामूहिक प्रयास है। मेरी यही इच्छा है कि जैन अच्छा जैन बने, हिन्दु अच्छा हिन्दु बने, इसाई अच्छा इसाई बने और मुस्लिम एक अच्छा मुस्लिम बने। हर व्यक्ति अपने–अपने धर्म का पालन करते हुए एक अच्छा इंसान बने। आचार्य तुलसी ने जीवनपर्यन्त इस मानवधर्म का ही प्रचार किया। आज धर्म–सम्प्रदायों का शोर तो बहुत है, अनुयायियों की संख्या भी अरबों में है लेकिन इंसानियत कहां बची है? आज पूरा विष्व वहनीयता एवं

पारिस्थितिकी के संकट के साथ वैयक्तिक जीवन की शुचिता–चारित्रिक पतन की विकट समस्या से जूझ रहा है। वस्तुतः प्राकृतिक आपदाएं भी (अवहनीयता – नॉन–सस्टेनेबिलिटी, पारिस्थितिकीय एवं जैव–विविधता का संकट, भविष्य की पारिस्थितिकीय वहनीयता – इको–सस्टेनेबिलिटी ऑफ द फ्यूचर का संकट, जलवायु परिवर्तन, वैष्विक उष्णता का संकट आदि) अनैतिकता की कोख की ही उपज है। अणुव्रत अभियान पांच महाव्रतों का ही नवनीत है। अणुव्रत सभी वर्गों के लिए है।"

मैं किसी निर्दोष जीव की हत्या नहीं करूंगा, यह पहला अणुव्रत है। अर्थात् ग्रहस्थ होने के कारण यदि कोई आपसे हिंसक व्यवहार करता है तो आत्मरक्षा के लिए व्यक्ति को हिंसा का सहारा लेना पड़ता है। अतः सेल्फ डिफेन्स का निषेध नहीं है। आदर्ष तो यही है कि दोषी व्यक्ति को भी क्षमा किया जाय लेकिन यह व्यावहारिक नहीं है। इस एकमात्र अणुव्रत की लक्ष्मण रेखा से समाज में अनावष्यक हिंसा कम हो सकती है।

दूसरा एवं तीसरा अणुव्रत भी पहले अणुव्रत के ही पूरक हैं जिसमें किसी पर आक्रमण न करने एवं हिंसक आन्दोलनों में भाग न लेने की शपथ दी जाती है। चौथा और पांचवा अणुव्रत है – "मैं मानवीय एकता में विष्वास करूंगा, मैं धार्मिक सहिष्णुता का अभ्यास करूंगा, एक–दूसरे के पूरक हैं। आज सारा विष्व धर्मों और जातियों में विभक्त है। लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हम जैन, हिन्दू एवं मुस्लिम के पहले इंसान हैं। अतः एक–दूसरे के प्रति आदर और एक–दूसरे के धर्म के प्रति सहिष्णुता जरूरी है। दुनिया में एक ही जाति है वह है मनुष्य जाति। ये अणुव्रत रूपी लक्ष्मण रेखाएं हमें विभाजन से बचाती है। मानवीय एकता का नारा हिन्दू धर्म में भी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' नारे में निहित है। निर्दोष जीव को न मारने के अणुव्रत में पर्यावरण की पर्याप्त सुरक्षा है।

छठा अणुव्रत हमें नैतिक एवं प्रामाणिक आचरण में बांधता है। इसमें किसी को धोखा न देने और नुकसान न पहुंचाने का संकल्प है। इस अणुव्रत की लक्ष्मण रेखा स्वस्थ समाज के निर्माण की दिषा में बड़ा कदम है।

अणुव्रत आचार संहिता का 7वां व्रत हमें अब्रह्मचर्य एवं धन संग्रह की सीमा निर्धारित करने की प्रेरणा देता है। यह व्यक्ति को एक निष्चित धन राषि से अधिक सम्पत्ति न अर्जन करने की लक्ष्मण रेखा खींचने के लिए कहता है। पर स्त्री गमन का सर्वथा त्याग करना जरूरी है। इस व्रत से समाज में बलात्कार एवं नारी शोषण की घटनाओं में कमी लाने का प्रयास है।

आठवें अणुव्रत में चुनाव में अनैतिक साधनों का प्रयोग न करने की मर्यादा है। हर व्यक्ति जानता है कि आज चुनाव में धन एवं झूठ का बोलबाला है। कोई भी दल (वामपंथी पाटियों को छोड़कर) इस महामारी से मुक्त नहीं है। मुझे आज भी याद है 1957 के चुनाव में आचार्य तुलसी ने सभी राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया और अणुव्रत के इस व्रत का पालन करने का आग्रह किया। सभी ने एकमत से इसे स्वीकार किया। उन दिनों के अखबारों की सुर्खियों में इस समाचार को अहमियत दी गई। उन दिनों का चुनाव कटुता, शत्रुता एवं असहिष्णुता मुक्त चुनाव होता था। कहते हैं आज लोग धर्म के नाम पर वोट मांगते हैं लेकिन क्या उनका आचरण भी धर्म का है? यह अणुव्रत अत्यधिक महत्वपूर्ण है। क्या आज के राजनेता इस अणुव्रत को ग्रहण करने के लिए आगे आएंगे? मेरा उत्तर 'नहीं' ही है। आचार्य तुलसी एवं उनके यषस्वी उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ चुनाव में शुचिता को लेकर बहुत चिंतित रहते थे। उन्होंने अपने स्तर पर देष की राजनीति में अणुव्रत के माध्यम से शुचिता के लिए बहुत प्रयत्न किया भी लेकिन आज की स्थिति अत्यधिक जटिल है। इसमें मित्रता का नितान्त अभाव है। चुनाव मैत्रीपूर्ण वातावरण में हो, यही अणुव्रत चाहता है।

9वां अणुव्रत अणुव्रतियों को अंधविष्वास, कुरीतियों एवं रूढ़ियों से बचने के लिए प्रेरित करता है तो दसवां अणुव्रत किसी भी प्रकार के नषे का निषेध करता है। युवकों में यह रोग बढ़ता जा रहा है। नषा समाज को रूग्ण बनाता है और स्वस्थ समाज एवं उन्नत राष्ट्र के लिए यह अपेक्षा की जाती है कि नषा मुक्ति का व्यापक अभियान चले।

11वां अणुव्रत आज के परिप्रेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण है। पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के निरंतर क्षरण से आज प्रायः सभी देष इस समस्या से जूझ रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ वहनीय विकास (सस्टेनेबल डेवलपमेंट) के लिए भागीरथी प्रयत्न कर रहा है लेकिन जब तक वैयक्तिक स्तर पर हम सब वस्तुओं की खपत की सीमा निर्धारित नहीं करेंगे, समस्या बढ़ती ही जावेगी। पीने के पानी की विकट समस्या है और ऐसी भविष्यवाणी की गई है कि तीसरा विष्व युद्ध पानी के लिए लड़ा जावेगा।

आचार्य तुलसी ने प्रत्येक वर्ग के लिए इन 11 अणुव्रतों के अलावा विद्यार्थियों, षिक्षकों, व्यापारियों, सरकारी एवं निजी क्षेत्र के कर्मचारियों, वकीलों आदि के लिए अलग से अणुव्रत निर्धारित कर एक अहिंसक एवं स्वस्थ समाज के अभ्युदय की परिकल्पना की थी। आज अणुव्रत आन्दोलन 75 वर्ष पूरा कर रहा है। अणुव्रत अमृत महोत्सव का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन किया जा रहा है। आचार्य श्री महाश्रमण भी अहिंसा यात्रा द्वारा जन–जन तक अणुव्रत का संदेष पहुंचा रहे हैं एवं उन्होंने नषा मुक्त जीवन अभियान भी संचालित कर रखा है। मेरा विष्वास है कि धीरे–धीरे अणुव्रत मर्यादित जीवन की लक्ष्मण रेखा के रूप में समाज में एक स्वीकार्य अभियान बनेगा।